تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ؕ ﴿٤٧﴾

ख़याल न करना कि **अल्लाह** अपने रसूलों से वा'दा ख़िलाफ़ करेगा[114] बेशक **अल्लाह** ग़ालिब है बदला लेने वाला

یَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَیْرَ الْاَرْضِ وَ السَّمٰوٰتُ وَ بَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ

जिस दिन[115] बदल दी जाएगी ज़मीन इस ज़मीन के सिवा और आस्मान[116] और लोग सब निकल खड़े होंगे[117] एक **अल्लाह** के सामने

الْقَهَّارِ ﴿٤٨﴾ وَ تَرَى الْمُجْرِمِیْنَ یَوْمَىِٕذٍ مُّقَرَّنِیْنَ فِی الْاَصْفَادِ ۚ ﴿٤٩﴾

जो सब पर ग़ालिब है और उस दिन तुम मुजरिमों[118] को देखोगे कि बेड़ियों में एक दूसरे से जुड़े होंगे[119]

سَرَابِیْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّ تَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۙ ﴿٥٠﴾ لِیَجْزِیَ اللّٰهُ كُلَّ

उन के कुरते राल के होंगे[120] और उन के चेहरे आग ढांप लेगी इस लिये कि **अल्लाह** हर जान को

نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِیْعُ الْحِسَابِ ﴿٥١﴾ هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَ

उस की कमाई का बदला दे बेशक **अल्लाह** को हिसाब करते कुछ देर नहीं लगती येह[121] लोगों को हुक्म पहुंचाना है और

لِیُنْذَرُوْا بِهٖ وَ لِیَعْلَمُوْۤا اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ لِیَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۠ ﴿٥٢﴾ ع ٧ ١٩

इस लिये कि वोह इस से डराए जाएं और इस लिये कि वोह जान लें कि वोह एक ही मा'बूद है[122] और इस लिये कि अ़क़्ल वाले नसीहत मानें

اٰیَاتُهَا ٩٩ | ١٥ سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّیَّةٌ ٥٤ | رُكُوْعَاتُهَا ٦

सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में निनानवे आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ وَ قُرْاٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿١﴾

येह आयतें हैं किताब और रोशन क़ुरआन की

114 : येह तो मुम्किन ही नहीं वोह ज़रूर वा'दा पूरा करेगा और अपने रसूल की नुसरत फ़रमाएगा, इन के दीन को ग़ालिब करेगा, इन के दुश्मनों को हलाक करेगा **115 :** इस दिन से रोज़े क़ियामत मुराद है। **116 :** ज़मीन व आस्मान की तब्दीली में मुफ़स्सिरीन के दो क़ौल हैं : **एक** येह कि इन के औसाफ़ बदल दिये जाएंगे मसलन ज़मीन एक सत्ह़ हो जाएगी न इस पर पहाड़ बाक़ी रहेंगे न बुलन्द टीले न गहरे ग़ार न दरख़्त न इमारत न किसी बस्ती और इक़्लीम का निशान और आस्मान पर कोई सितारा न रहेगा और आफ़्ताब, माहताब की रोशनियां मा'दूम होंगी, येह तब्दीली औसाफ़ की है ज़ात की नहीं। **दूसरा** क़ौल येह है कि आस्मान व ज़मीन की ज़ात ही बदल दी जाएगी, इस ज़मीन की जगह एक दूसरी चांदी की ज़मीन होगी, सफ़ेद व साफ़ जिस पर न कभी ख़ून बहाया गया हो न गुनाह किया गया हो और आस्मान सोने का होगा। येह दो क़ौल अगर्चे ब ज़ाहिर बाहम मुख़ालिफ़ मा'लूम होते हैं मगर इन में से हर एक सह़ीह़ है और वज्हे जम्अ़ येह है कि अव्वल तब्दीले सिफ़ात होगी और दूसरी मरतबा बा'दे हिसाब तब्दीले सानी होगी इस में ज़मीन व आस्मान की ज़ातें ही बदल जाएंगी। **117 :** अपनी क़ब्रों से **118 :** या'नी काफ़िरों **119 :** अपने शयात़ीन के साथ बंधे हुए **120 :** सियाह रंग बदबूदार जिन से आग के शो'ले और ज़ियादा तेज़ हो जाएं। (مدارک وخازن)

www.dawateislami.net

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ۝٢ ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا

बहुत आरज़ूएं करेंगे काफ़िर[2] काश मुसल्मान होते उन्हें छोड़ो[3] कि खाएं और बरतें[4]

وَيُلْهِهِمُ الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣ وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا

और उम्मीद[5] उन्हें खेल में डाले तो अब जाना चाहते हैं[6] और जो बस्ती हम ने हलाक की उस का एक

كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤ مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥ وَ

जाना हुवा नविश्ता (लिखा हुवा फ़ैसला) था[7] कोई गुरोह अपने वा'दे से न आगे बढ़े न पीछे हटे और

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦ لَوْ مَا تَاْتِيْنَا

बोले[8] कि ऐ वोह जिन पर क़ुरआन उतरा बेशक तुम मजनून हो[9] हमारे पास फ़िरिश्ते क्यूं

بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧ مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ

नहीं लाते[10] अगर तुम सच्चे हो[11] हम फ़िरिश्ते बेकार नहीं उतारते

وَمَا كَانُوْٓا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَ اِنَّا لَهٗ

और वोह उतरें तो उन्हें मोहलत न मिले[12] बेशक हम ने उतारा है येह क़ुरआन और बेशक हम ख़ुद

لَحٰفِظُوْنَ ۝٩ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠ وَمَا

इस के निगहबान हैं[13] और बेशक हम ने तुम से पहले अगली उम्मतों में रसूल भेजे और

तफ़्सीरे बैज़ावी में है कि उन के बदनों पर राल (एक ख़ास गोंद) लेप दी जाएगी वोह मिस्ल कुरते के हो जाएगी उस की सोज़िश और उस के रंग की वहशत व बदबू से तक्लीफ़ पाएंगे। **121 :** क़ुरआन शरीफ़ **122 :** या'नी इन आयात से **अल्लाह** तआ़ला की तौहीद की दलीलें पाएं। **1 :** सूरए हिज्र मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़ निनानवे आयतें, छ[6] सो चव्वन कलिमे, दो हज़ार सात सो साठ हर्फ़ हैं। **2 :** येह आरज़ूएं या वक़्ते नज़्अ़ अ़ज़ाब देख कर होंगी जब काफ़िर को मा'लूम हो जाएगा कि वोह गुमराही में था या आख़िरत में रोज़े क़ियामत के शदाइद और अहवाल और अपना अन्जाम व मआल देख कर। ज़ज्जाज का क़ौल है कि काफ़िर जब कभी अपने अहवाल, अ़ज़ाब और मुसल्मानों पर **अल्लाह** की रहमत देखेंगे हर मरतबा आरज़ूएं करेंगे कि **3 :** ऐ मुस्तफ़ा ! (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) **4 :** दुन्या की लज़्ज़तें **5 :** तनअ़्उ़म व तलज़्ज़ुज़ (ऐशो लज़्ज़त) व तूले हयात की जिस के सबब वोह ईमान से महरूम हैं। **6 :** अपना अन्जामे कार, इस में तम्बीह है कि लम्बी उम्मीदों में गिरिफ़्तार होना और लज़्ज़ाते दुन्या की त़लब में ग़र्क़ हो जाना ईमानदार की शान नहीं। हज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه ने फ़रमाया : लम्बी उम्मीदें आख़िरत को भुलाती हैं और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ़ हक़ से रोकता है। **7 :** लौहे महफ़ूज़ में इसी मुअ़य्यन वक़्त पर वोह हलाक हुई। **8 :** कुफ़्फ़ारे मक्का हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से **9 :** उन का येह क़ौल तमस्ख़ुर और इस्तिहज़ा (या'नी मज़ाक़) के तौर पर था जैसा कि फ़िरऔ़न ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की निस्बत कहा था : "اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ" । **10 :** जो तुम्हारे रसूल होने और क़ुरआन शरीफ़ के किताबे इलाही होने की गवाही दें **11 :** **अल्लाह** तआ़ला इस के जवाब में फ़रमाता है **12 :** फ़िलहाल अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार कर दिये जाएं। **13 :** कि तह्रीफ़ व तब्दील व ज़ियादती व कमी से इस की हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं, तमाम जिन्नो इन्स और सारी ख़ल्क़ के मक़्दूर (बस) में नहीं है कि इस में एक हर्फ़ की कमी बेशी करे या तग़्यीर व तब्दील कर सके और चूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने क़ुरआने करीम की हिफ़ाज़त का वा'दा फ़रमाया है इस लिये येह ख़ुसूसिय्यत सिर्फ़ क़ुरआन शरीफ़ ही की है दूसरी किसी किताब को येह बात मुयस्सर नहीं। येह हिफ़ाज़त कई त़रह़ पर है एक येह कि क़ुरआने करीम को मो'जिज़ा बनाया कि बशर का कलाम इस में मिल ही न सके, एक येह कि इस को मुआरज़े और मुक़ाबले से महफ़ूज़ किया कि कोई इस की मिस्ल कलाम बनाने पर क़ादिर न हो, एक येह कि सारी ख़ल्क़ को इस के नेस्तो

www.dawateislami.net

يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۱۱﴾ كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ

उन के पास कोई रसूल नहीं आता मगर उस से हंसी करते हैं[14] ऐसे ही हम उस हंसी को उन

قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿۱۲﴾ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳﴾

मुजरिमों[15] के दिलों में राह देते हैं वोह इस पर[16] ईमान नहीं लाते और अगलों की राह पड़ चुकी है[17]

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ﴿۱۴﴾ لَقَالُوْٓا

और अगर हम उन के लिये आस्मान में कोई दरवाज़ा खोल दें कि दिन को उस में चढ़ते जब भी येही

ع ١٥ اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ﴿۱۵﴾ وَلَقَدْ جَعَلْنَا

कहते कि हमारी निगाह बांध दी गई है बल्कि हम पर जादू हुवा[18] और बेशक हम ने

فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۶﴾ وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ

आस्मान में बुर्ज बनाए[19] और उसे देखने वालों के लिये आरास्ता किया[20] और उसे हम ने हर शैतान

رَّجِيْمٍ ﴿۱۷﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۸﴾ وَ

मरदूद से महफ़ूज़ रखा[21] मगर जो चोरी छुपे सुनने जाए तो उस के पीछे पड़ता है रोशन शो'ला[22] और

الْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ

हम ने ज़मीन फैलाई और इस में लंगर डाले[23] और इस में हर चीज़ अन्दाज़े

नाबूद और मा'दूम करने से आ़जिज़ कर दिया कि कुफ़्फ़ार बा वुजूद कमाले अ़दावत के इस किताबे मुक़द्दस को मा'दूम करने से आ़जिज़ हैं। **14 :** इस आयत में बताया गया कि जिस त़रह कुफ़्फ़ारे मक्का ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم से जाहिलाना बातें कीं और बे अदबी से आप को मजनून कहा, क़दीम ज़माने से कुफ़्फ़ार की अम्बिया के साथ येही आ़दत रही है और वोह रसूलों के साथ तमस्ख़ुर करते रहे। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की तस्कीने ख़ातिर (तसल्ली व दिलजूई) है। **15 :** या'नी मुश्रिकीने मक्का **16 :** या'नी सय्यिदे अम्बिया صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم या क़ुरआन पर **17 :** कि वोह अम्बिया की तक्ज़ीब कर के अ़ज़ाबे इलाही से हलाक होते रहे हैं, येही ह़ाल इन का है तो इन्हें अ़ज़ाबे इलाही से डरते रहना चाहिये। **18 :** या'नी इन कुफ़्फ़ार का इनाद इस दरजे पर पहुंच गया है कि अगर इन के लिये आस्मान में दरवाज़ा खोल दिया जाए और इन्हें उस में चढ़ना मुयस्सर हो और दिन में उस से गुज़रें और आंखों से देखें जब भी न मानें और येह कह दें कि हमारी नज़र बन्दी की गई और हम पर जादू हुवा, तो जब ख़ुद अपने मुआ़यने से उन्हें यक़ीन ह़ासिल न हुवा तो मलाएका के आने और गवाही देने से जिस को येह त़लब करते हैं उन्हें क्या फ़ाएदा होगा। **19 :** जो कवाकिब सय्यारा के मनाज़िल हैं, वोह बारह हैं : [1]ह़मल, [2]सौर, [3]जौज़ा, [4]सरत़ान, [5]असद, [6]सुम्बुला, [7]मीज़ान, [8]अ़क़्रब, [9]क़ौस, [10]जद्य, [11]दल्व, [12]हूत। **20 :** सितारों से **21 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : शयात़ीन आस्मानों में दाख़िल होते थे और वहां की ख़बरें काहिनों के पास लाते थे जब ह़ज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुए तो शयात़ीन तीन आस्मानों से रोक दिये गए। जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की विलादत हुई तो तमाम आस्मानों से मन्अ़ कर दिये गए। **22 :** शिहाब उस सितारे को कहते हैं जो शो'ले के मिस्ल रोशन होता है और फ़िरिश्ते उस से शयात़ीन को मारते हैं। **23 :** पहाड़ों के ताकि साबित व क़ाइम रहे और जुम्बिश न करे।

مَّوْزُوْنٍ ﴿١٩﴾ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ﴿٢٠﴾ وَ

से उगाई और तुम्हारे लिये इस में रोज़ियां कर दीं[24] और वोह कर दिये जिन्हें तुम रिज़्क़ नहीं देते[25] और

اِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ۫ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢١﴾

कोई चीज़ नहीं जिस के हमारे पास ख़ज़ाने न हों[26] और हम उसे नहीं उतारते मगर एक मा'लूम अन्दाज़े से

وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ

और हम ने हवाएं भेजीं बादलों को बार वर करने वालियां[27] तो हम ने आस्मान से पानी उतारा फिर वोह तुम्हें पीने को दिया

وَمَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَ اِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ

और तुम कुछ उस के ख़ज़ान्ची नहीं[28] और बेशक हम ही जिलाएं और हम ही मारें और हम

الْوٰرِثُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا

ही वारिस हैं[29] और बेशक हमें मा'लूम हैं जो तुम में आगे बढ़े और बेशक हमें मा'लूम हैं

الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ؕ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥﴾ ع ٢ ١٠ ٢

जो तुम में पीछे रहे[30] और बेशक तुम्हारा रब ही उन्हें क़ियामत में उठाएगा[31] बेशक वोही इल्म व हिक्मत वाला है

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٦﴾ ۚ وَالْجَآنَّ

और बेशक हम ने आदमी को[32] बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी[33] और जिन्न को

---

24 : ग़ल्ले फल वग़ैरा। **25 :** बांदी ग़ुलाम चौपाए और ख़ुद्दाम वग़ैरा। **26 :** ख़ज़ाने होना इबारत है इक़्तिदार व इख़्तियार से मा'ना येह हैं कि हम हर चीज़ के पैदा करने पर क़ादिर हैं जितनी चाहें और जो अन्दाज़ा मुक़्तज़ाए हिक्मत हो। **27 :** जो आबादियों को पानी से भरती और सैराब करती हैं। **28 :** कि पानी तुम्हारे इख़्तियार में हो बा वुजूदे कि तुम्हें इस की ह़ाजत है। इस में **अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत और बन्दों के इज्ज़ पर दलालते अ़ज़ीमा है। **29 :** या'नी तमाम ख़ल्क़ फ़ना होने वाली है और हम ही बाक़ी रहने वाले हैं और मुद्दइये मुल्क की मिल्क ज़ाएअ़ हो जाएगी और सब मालिकों का मालिक बाक़ी रहेगा। **30 :** या'नी पहली उम्मतें और उम्मते मुह़म्मदिय्यह जो सब उम्मतों में पिछली है या वोह जो ता़अ़त व ख़ैर में सब्क़त करने वाले हैं और जो सुस्ती से पीछे रह जाने वाले हैं या वोह जो फ़ज़ीलत ह़ासिल करने के लिये आगे बढ़ने वाले हैं और जो उ़ज़्र से पीछे रह जाने वाले हैं। **शाने नुज़ूल :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने जमाअ़ते नमाज़ की सफ़े अव्वल के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए तो सह़ाबा सफ़े अव्वल ह़ासिल करने में निहायत कोशां हुए और उन का इज़्दिह़ाम होने लगा और जिन ह़ज़रात के मकान मस्जिद शरीफ़ से दूर थे वोह अपने मकान बेच कर क़रीब मकान ख़रीदने पर आमादा हो गए ताकि सफ़े अव्वल में जगह मिलने से कभी महरूम न हों, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उन्हें तसल्ली दी गई कि सवाब निय्यतों पर है और **अल्लाह** तआ़ला अगलों को भी जानता है और जो उ़ज़्र से पीछे रह गए हैं उन को भी जानता है और उन की निय्यतों से भी ख़बरदार है और उस पर कुछ मख़्फ़ी नहीं। **31 :** जिस ह़ाल पर वोह मरे होंगे। **32 :** या'नी ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام को सूखी **33 : अल्लाह** तआ़ला ने जब ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام के पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो ज़मीन से एक मुश्त ख़ाक ली उस को पानी में ख़मीर किया जब वोह गारा सियाह हो गया और उस में बू पैदा हुई तो उस में सूरते इन्सानी बनाई, फिर वोह सूख कर ख़ुश्क हो गया तो जब हवा उस में जाती तो वोह बजता और उस में आवाज़ पैदा होती जब आफ़्ताब की तमाज़त (गरमी) से वोह पुख़्ता हो गया तो उस में रूह़ फूंकी और वोह इन्सान हो गया।

www.dawateislami.net

خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾ وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنِّیْ

इस से पहले बनाया बे धूएं की आग से[34] और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मैं

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٢٨﴾ فَاِذَا سَوَّیْتُهٗ وَ نَفَخْتُ

आदमी को बनाने वाला हूं बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है तो जब मैं उसे ठीक कर लूं और उस में

فِیْهِ مِنْ رُّوْحِیْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِیْنَ ﴿٢٩﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓىِٕكَةُ كُلُّهُمْ

अपनी तरफ़ की ख़ास मुअ़ज़्ज़ज़ रूह फूंक लूं[35] तो उस[36] के लिये सज्दे में गिर पड़ना तो जितने फ़िरिश्ते थे सब के सब

اَجْمَعُوْنَ ﴿٣٠﴾ اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰۤی اَنْ یَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ

सज्दे में गिरे सिवा इब्लीस के उस ने सज्दे वालों का साथ न माना[37] फ़रमाया

یٰۤاِبْلِیْسُ مَا لَكَ اَلَّا تَكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِیْنَ ﴿٣٢﴾ قَالَ لَمْ اَكُنْ لِّاَسْجُدَ

ऐ इब्लीस तुझे क्या हुवा कि सज्दा करने वालों से अलग रहा बोला मुझे ज़ैबा नहीं कि बशर को

لِبَشَرٍ خَلَقْتَهٗ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ﴿٣٣﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا

सज्दा करूं जिसे तू ने बजती मिट्टी से बनाया जो सियाह बूदार गारे से थी फ़रमाया तू जन्नत से निकल जा

فَاِنَّكَ رَجِیْمٌ ﴿٣٤﴾ وَّ اِنَّ عَلَیْكَ اللَّعْنَةَ اِلٰى یَوْمِ الدِّیْنِ ﴿٣٥﴾ قَالَ رَبِّ

कि तू मरदूद है और बेशक क़ियामत तक तुझ पर ला'नत है[38] बोला ऐ मेरे रब

فَاَنْظِرْنِیْۤ اِلٰى یَوْمِ یُبْعَثُوْنَ ﴿٣٦﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِیْنَ ﴿٣٧﴾ اِلٰى

तू मुझे मोहलत दे उस दिन तक कि वोह उठाए जाएं[39] फ़रमाया तू उन में है जिन को उस मा'लूम

یَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٣٨﴾ قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ لَاُزَیِّنَنَّ لَهُمْ فِی

वक़्त के दिन तक मोहलत है[40] बोला ऐ रब मेरे क़सम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं उन्हें ज़मीन

34 : जो अपनी हरारत व लताफ़त से मसामों में नुफ़ूज़ (सरायत) कर जाती है। **35 :** और उस को हयात अ़ता फ़रमा दूं **36 :** की तह़िय्यत व ता'ज़ीम **37 :** और ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सज्दा न किया तो **अल्लाह** तआ़ला ने **38 :** कि आस्मान व ज़मीन वाले तुझ पर ला'नत करेंगे और जब क़ियामत का दिन आएगा तो इस ला'नत के साथ हमेशगी के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार किया जाएगा जिस से कभी रिहाई न होगी, येह सुन कर शैत़ान **39 :** या'नी क़ियामत के दिन तक। इस से शैत़ान का मत़लब येह था कि वोह कभी न मरे क्यूं कि क़ियामत के बा'द कोई न मरेगा और क़ियामत तक की इस ने मोहलत मांग ही ली लेकिन इस की इस दुआ़ को **अल्लाह** तआ़ला ने इस त़रह़ क़बूल किया कि **40 :** जिस में तमाम ख़ल्क़ मर जाएगी और वोह नफ़्ख़ए ऊला (पहली मरतबा फूंका जाने वाला सूर) है तो शैत़ान के मुर्दा रहने की मुद्दत नफ़्ख़ए ऊला से नफ़्ख़ए सानिया (दूसरे सूर फूंकने) तक चालीस बरस है और इस को इस क़दर मोहलत देना इस के इक्राम के लिये नहीं बल्कि इस की बला व शक़ावत और अ़ज़ाब की ज़ियादती के लिये है, येह सुन कर शैत़ान।

www.dawateislami.net

الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

में भुलावे दूंगा[41] और ज़रूर मैं उन सब को[42] बे राह कर दूंगा मगर जो उन में तेरे चुने हुए बन्दे हैं[43]

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾ اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ

फ़रमाया येह रास्ता सीधा मेरी त़रफ़ आता है बेशक मेरे[44] बन्दों पर तेरा कुछ

سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ

क़ाबू नहीं सिवा उन गुमराहों के जो तेरा साथ दें[45] और बेशक जहन्नम उन सब का

اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَهَا سَبْعَةُ اَبْوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُوْمٌ ﴿٤٤﴾ ع ٣ ١٩ ٣

वा'दा है[46] इस के सात दरवाज़े हैं[47] हर दरवाज़े के लिये उन में से एक हिस्सा बटा हुवा है[48]

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ؕ ﴿٤٥﴾ اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَ

बेशक डर वाले बाग़ों और चश्मों में हैं[49] उन में दाख़िल हो सलामती के साथ अमान में[50] और

نَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٧﴾ لَا

हम ने उन के सीनों में जो कुछ[51] कीने थे सब खींच लिये[52] आपस में भाई हैं[53] तख़्तों पर रू बरू बैठे न

يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ﴿٤٨﴾ نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا

उन्हें उस में कुछ तक्लीफ़ पहुंचे न वोह उस में से निकाले जाएं ख़बर दो[54] मेरे बन्दों को कि बेशक

الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٩﴾ وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ﴿٥٠﴾ وَنَبِّئْهُمْ عَنْ

मैं ही हूं बख़्शने वाला मेहरबान और मेरा ही अ़ज़ाब दर्दनाक अ़ज़ाब है और उन्हें अह़वाल सुनाओ

41 : या'नी दुन्या में गुनाहों की रग़बत दिलाऊंगा **42 :** दिलों में वस्वसा डाल कर **43 :** जिन्हें तू ने अपनी तौहीद व इबादत के लिये बरगुज़ीदा फ़रमा लिया उन पर शैत़ान का वस्वसा और उस का कैद (धोका) न चलेगा। **44 :** ईमानदार **45 :** या'नी जो काफ़िर कि तेरे मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार हो जाएं और तेरे इत्तिबाअ़ का क़स्द कर लें। **46 :** इब्लीस का भी और उस के इत्तिबाअ़ करने वालों का भी। **47 :** या'नी सात त़बके़। इब्ने जुरैज का क़ौल है कि दोज़ख़ के सात दरकात (त़बक़ात) हैं : अव्वल [1]जहन्नम, [2]लज़ा, [3]हुत़मह, [4]सईर, [5]सक़र, [6]जहीम, [7]हावियह। **48 :** या'नी शैत़ान की पैरवी करने वाले भी सात हिस्सों में मुन्क़सिम हैं इन में से हर एक के लिये जहन्नम का एक दरका (त़बक़ा) मुअ़य्यन है। **49 :** उन से कहा जाएगा कि **50 :** या'नी जन्नत में दाख़िल हो अम्नो सलामती के साथ न यहां से निकाले जाओ न मौत आए न कोई आफ़त रूनुमा हो न कोई ख़ौफ़ न परेशानी। **51 :** दुन्या में **52 :** और उन के नुफ़ूस को हिक़्दो ह़सद व इ़नादो अ़दावत वग़ैरा मज़्मूम ख़स्लतों से पाक कर दिया वोह **53 :** एक दूसरे के साथ महब्बत करने वाले ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि मैं और उ़स्मान और त़ल्ह़ा और ज़ुबैर इन ही में से हैं या'नी हमारे सीनों से इनादो अ़दावत और बुग़्ज़ो ह़सद निकाल दिया गया है, हम आपस में ख़ालिस महब्बत रखने वाले हैं। इस में रवाफ़िज़ का रद है। **54 :** ऐ मुह़म्मद मुस्त़फ़ा ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ।

www.dawateislami.net

وقف لازم

ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ﴿۵۱﴾ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ

इब्राहीम के मेहमानों का[55] जब वोह उस के पास आए तो बोले सलाम[56] कहा हमें तुम से

وَجِلُوْنَ ﴿۵۲﴾ قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ﴿۵۳﴾ قَالَ

डर मा'लूम होता है[57] उन्हों ने कहा डरिये नहीं हम आप को एक इ़ल्म वाले लड़के की बिशारत देते हैं[58] कहा

اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰۤى اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ﴿۵۴﴾ قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ

क्या इस पर मुझे बिशारत देते हो कि मुझे बुढ़ापा पहुंच गया अब काहे पर बिशारत देते हो[59] कहा हम ने आप को सच्ची

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ﴿۵۵﴾ قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖۤ

बिशारत दी है[60] आप ना उम्मीद न हों कहा अपने रब की रह़मत से कौन ना उम्मीद हो

اِلَّا الضَّآلُّوْنَ ﴿۵۶﴾ قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۷﴾ قَالُوْۤا اِنَّاۤ

मगर वोही जो गुमराह हुए[61] कहा फिर तुम्हारा क्या काम है ऐ फ़िरिश्तो[62] बोले हम

اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿۵۸﴾ اِلَّاۤ اٰلَ لُوْطٍ ؕ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ

एक मुजरिम क़ौम की त़रफ़ भेजे गए हैं[63] मगर लूत़ के घर वाले उन सब को हम

ع ٤

اَجْمَعِيْنَ ﴿۵۹﴾ اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَاۤ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۶۰﴾ ع فَلَمَّا جَآءَ

बचा लेंगे[64] मगर उस की औ़रत हम ठहरा चुके हैं कि वोह पीछे रह जाने वालों में है[65] तो जब

اٰلَ لُوْطِ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۶۱﴾ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ﴿۶۲﴾ قَالُوْا بَلْ

लूत़ के घर फ़िरिश्ते आए[66] कहा तुम तो कुछ बेगाना लोग हो[67] कहा बल्कि

55 : जिन्हें **अल्लाह** तआ़ला ने इस लिये भेजा था कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को फ़रज़न्द की बिशारत दें और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम को हलाक करें। येह मेहमान ह़ज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام थे मअ़ कई फ़िरिश्तों के। 56 : या'नी फ़िरिश्तों ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को सलाम किया और आप की तह़िय्यतो तक्रीम बजा लाए तो ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से 57 : इस लिये कि बे इज़्न और बे वक़्त आए और खाना नहीं खाया। 58 : या'नी ह़ज़रते इस्ह़ाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की, इस पर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने 59 : या'नी ऐसी पीराना साली (बुढ़ापे) में औलाद होना अ़जीबो ग़रीब है किस त़रह़ औलाद होगी, क्या हमें फिर जवान किया जाएगा या इसी ह़ालत में बेटा अ़त़ा फ़रमाया जाएगा ? फ़िरिश्तों ने 60 : क़ज़ाए इलाही इस पर जारी हो चुकी कि आप के बेटा हो और उस की ज़ुर्रिय्यत बहुत फैले 61 : या'नी मैं उस की रह़मत से ना उम्मीद नहीं क्यूं कि रह़मत से ना उम्मीद काफ़िर होते हैं, हां उस की सुन्नत जो आ़लम में जारी है उस से येह बात अ़जीब मा'लूम हुई और ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़िरिश्तों से 62 : या'नी इस बिशारत के सिवा और क्या काम है जिस के लिये तुम भेजे गए हो। 63 : या'नी क़ौमे लूत़ की त़रफ़ कि हम उन्हें हलाक करें 64 : क्यूं कि वोह ईमानदार हैं 65 : अपने कुफ़्र के सबब। 66 : ख़ूब सूरत नौ जवानों की शक्ल में और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को अन्देशा हुवा कि क़ौम इन के दरपै होगी तो आप ने फ़िरिश्तों से 67 : न तो यहां के बाशिन्दे हो न कोई मुसाफ़रत की अ़लामत तुम में पाई जाती है क्यूं आए हो ? फ़िरिश्तों ने।

www.dawateislami.net

جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ﴿٦٣﴾ وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَ اِنَّا

हम तो आप के पास वोह[68] लाए हैं जिस में येह लोग शक करते थे[69] और हम आप के पास सच्चा हुक्म लाए हैं और हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ اَدْبَارَهُمْ وَلَا

बेशक सच्चे हैं तो अपने घर वालों को कुछ रात रहे ले कर बाहर जाइये और आप उन के पीछे चलिये और

يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٥﴾ وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ

तुम में कोई पीछे फिर कर न देखे[70] और जहां को हुक्म है सीधे चले जाइये[71] और हम ने उसे उस

الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ

हुक्म का फ़ैसला सुना दिया कि सुब्ह होते इन काफ़िरों की जड़ कट जाएगी[72] और शहर वाले[73]

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٦٧﴾ قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللّٰهَ

ख़ुशियां मनाते आए लूत़ ने कहा येह मेरे मेहमान हैं[74] मुझे फ़ज़ीहत न करो[75] और अल्लाह से डरो

وَلَا تُخْزُوْنِ ﴿٦٩﴾ قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هٰٓؤُلَآءِ

और मुझे रुस्वा न करो[76] बोले क्या हम ने तुम्हें मन्अ़ न किया था कि औरों के मुआ़मले में दख़्ल न दो कहा येह क़ौम की औ़रतें

بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ﴿٧١﴾ لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿٧٢﴾

मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है[77] ऐ महबूब तुम्हारी जान की क़सम[78] बेशक वोह अपने नशे में भटक रहे हैं

فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا

तो दिन निकलते उन्हें चिंघाड़ ने आ लिया[79] तो हम ने उस बस्ती का ऊपर का हिस्सा उस के नीचे का हिस्सा कर दिया[80]

68 : अ़ज़ाब जिस के नाज़िल होने का आप अपनी क़ौम को ख़ौफ़ दिलाया करते थे **69 :** और आप को झुटलाते थे। **70 :** कि क़ौम पर क्या बला नाज़िल हुई और वोह किस अ़ज़ाब में मुब्तला किये गए। **71 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि हुक्म मुल्के शाम को जाने का था। **72 :** और तमाम क़ौम अ़ज़ाब से हलाक कर दी जाएगी। **73 :** या'नी शहर सदूम के रहने वाले। हज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की क़ौम के लोग हज़रते लूत़ عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के यहां ख़ूब सूरत नौ जवानों के आने की ख़बर सुन कर ब इरादए फ़ासिद व ब निय्यते नापाक **74 :** और मेहमान का इक्राम लाज़िम होता है, तुम इन की बे हुरमती का क़स्द कर के **75 :** कि मेहमान की रुस्वाई मेज़बान के लिये ख़जालत व शरमिन्दगी का सबब होती है। **76 :** इन के साथ बुरा इरादा कर के, इस पर क़ौम के लोग हज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام से **77 :** तो इन से निकाह़ करो और ह़राम से बाज़ रहो। अब अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم से ख़िता़ब फ़रमाता है **78 :** और मख़्लूक़े इलाही में से कोई जान बारगाहे इलाही में आप की जाने पाक की त़रह़ इ़ज़्ज़तो ह़ुरमत नहीं रखती और अल्लाह तआ़ला ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की उ़म्र के सिवा किसी की उ़म्र व ह़यात की क़सम नहीं फ़रमाई, येह मर्तबा सिर्फ़ हुज़ूर ही का है। अब इस क़सम के बा'द इर्शाद फ़रमाता है **79 :** या'नी होलनाक आवाज़ ने। **80 :** इस त़रह़ कि हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام उस ख़ित्ते को उठा कर आस्मान के क़रीब ले गए और वहां से औंधा कर के ज़मीन पर डाल दिया।

www.dawateislami.net

عَلَيۡهِمۡ حِجَارَةً مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ﴿۷۴﴾ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلۡمُتَوَسِّمِيۡنَ ﴿۷۵﴾

और उन पर कंकर के पथ्थर बरसाए बेशक इस में निशानियां हैं फ़िरासत वालों के लिये

وَاِنَّهَا لَبِسَبِيۡلٍ مُّقِيۡمٍ ﴿۷۶﴾ اِنَّ فِيۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ﴿۷۷﴾ وَاِنۡ كَانَ

और बेशक वोह बस्ती उस राह पर है जो अब तक चलती है[81] बेशक इस में निशानियां हैं ईमान वालों को और बेशक

وقف لازم

اَصۡحٰبُ الۡاَيۡكَةِ لَظٰلِمِيۡنَ ﴿۷۸﴾ فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ

झाड़ी वाले ज़रूर ज़ालिम थे[82] तो हम ने उन से बदला लिया[83] और बेशक येह दोनों बस्तियां[84]

ع ٥

مُّبِيۡنٍ ﴿۷۹﴾ وَلَقَدۡ كَذَّبَ اَصۡحٰبُ الۡحِجۡرِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۸۰﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ

खुले रास्ते पर पड़ती हैं[85] और बेशक हिज्र वालों ने रसूलों को झुटलाया[86] और हम ने उन को

اٰيٰتِنَا فَكَانُوۡا عَنۡهَا مُعۡرِضِيۡنَ ﴿۸۱﴾ وَكَانُوۡا يَنۡحِتُوۡنَ مِنَ الۡجِبَالِ بُيُوۡتًا

अपनी निशानियां दीं[87] तो वोह उन से मुंह फेरे रहे[88] और वोह पहाड़ों में घर तराशते थे

اٰمِنِيۡنَ ﴿۸۲﴾ فَاَخَذَتۡهُمُ الصَّيۡحَةُ مُصۡبِحِيۡنَ ﴿۸۳﴾ فَمَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا

बे ख़ौफ़[89] तो उन्हें सुब्ह् होते चिंघाड़ ने आ लिया[90] तो उन की कमाई कुछ

كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۸۴﴾ وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَاۤ اِلَّا

उन के काम न आई[91] और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है

بِالۡحَقِّ ؕ وَاِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ فَاصۡفَحِ الصَّفۡحَ الۡجَمِيۡلَ ﴿۸۵﴾ اِنَّ رَبَّكَ

अ़बस (बेकार) न बनाया और बेशक क़ियामत आने वाली है[92] तो तुम अच्छी त़रह़ दर गुज़र करो[93] बेशक तुम्हारा रब

81 : और क़ाफ़िले उस पर गुज़रते हैं और ग़ज़बे इलाही के आसार उन के देखने में आते हैं। **82 :** या'नी काफ़िर थे। ''اَيۡكَة'' झाड़ी को कहते हैं, उन लोगों का शहर सर सब्ज़ जंगलों और मर्ग़ज़ारों (सब्ज़ा ज़ारों) के दरमियान था अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रते शुऐब عَلَيۡهِ السَّلَام को उन पर रसूल बना कर भेजा, उन लोगों ने ना फ़रमानी की और ह़ज़रते शुऐब عَلَيۡهِ السَّلَام को झुटलाया। **83 :** या'नी अ़ज़ाब भेज कर हलाक किया। **84 :** या'नी क़ौमे लूत़ के शहर और अस्ह़ाबे ऐका के **85 :** जहां आदमी गुज़रते हैं और देखते हैं, तो ऐ अहले मक्का तुम इन को देख कर क्यूं इ़ब्रत ह़ासिल नहीं करते। **86 :** ''हिज्र'' एक वादी है मदीने और शाम के दरमियान जिस में क़ौमे समूद रहते थे, उन्हों ने अपने पैग़म्बर ह़ज़रते सालेह़ عَلَيۡهِ السَّلَام की तक्ज़ीब की और एक नबी की तक्ज़ीब तमाम अम्बिया की तक्ज़ीब है क्यूं कि हर रसूल तमाम अम्बिया पर ईमान लाने की दा'वत देता है। **87 :** कि पथ्थर से नाक़ा (ऊंटनी को) पैदा किया जो बहुत से अ़जाइब पर मुश्तमिल था, मसलन उस का अ़ज़ीमुल जुस्सा (क़दो क़ामत का बड़ा) होना और पैदा होते ही बच्चा जनना और कसरत से दूध देना कि तमाम क़ौमे समूद को काफ़ी हो वग़ैरा, येह सब ह़ज़रते सालेह़ عَلَيۡهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मो'जिज़ात और क़ौमे समूद के लिये हमारी निशानियां थीं **88 :** और ईमान न लाए। **89 :** कि उन्हें उस के गिरने और उस में नक़्ब लगाए जाने का अन्देशा न था और वोह समझते थे कि येह घर तबाह नहीं हो सकते इन पर कोई आफ़त नहीं आ सकती। **90 :** और वोह अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार हुए। **91 :** और उन के मालो मताअ़ और उन के मज़बूत़ मकान उन्हें अ़ज़ाब से न बचा सके। **92 :** और हर एक को उस के अ़मल की जज़ा मिलेगी। **93 :** ऐ मुस्त़फ़ा ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَسَلَّم और अपनी क़ौम की ईज़ाओं पर तह़म्मुल करो। येह हुक्म आयते क़िताल से मन्सूख़ हो गया।

www.dawateislami.net

هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨٦﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ

ही बहुत पैदा करने वाला जानने वाला है[94] और बेशक हम ने तुम को सात आयतें दीं जो दोहराई जाती हैं[95] और अ़ज़मत

الْعَظِيْمَ ﴿٨٧﴾ لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا

वाला क़ुरआन अपनी आंख उठा कर उस चीज़ को न देखो जो हम ने उन के कुछ जोड़ों को बरत्ने को दी[96] और

تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾ وَقُلْ اِنِّيْۤ اَنَا

उन का कुछ ग़म न खाओ[97] और मुसल्मानों को अपने रह़मत के परों में ले लो[98] और फ़रमाओ कि मैं ही हूं

النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ﴿٨٩﴾ كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ ﴿٩٠﴾ الَّذِيْنَ جَعَلُوا

साफ़ डर सुनाने वाला (उस अ़ज़ाब से) जैसा हम ने बांटने वालों पर उतारा जिन्हों ने कलामे इलाही को

الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ ﴿٩١﴾ فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٢﴾ عَمَّا كَانُوْا

तिक्के बोटी कर लिया[99] तो तुम्हारे रब की क़सम हम ज़रूर उन सब से पूछेंगे[100] जो कुछ वोह

يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٣﴾ الربع فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٩٤﴾ اِنَّا

करते थे[101] तो अ़लानिया कह दो जिस बात का तुम्हें हुक्म है[102] और मुश्रिकों से मुंह फेर लो[103] बेशक

94 : उसी ने सब को पैदा किया और वोह अपनी मख़्लूक़ के तमाम ह़ाल जानता है। **95 :** नमाज़ की रक्अ़तों में या'नी हर रक्अ़त में पढ़ी जाती हैं और इन सात आयतों से सूरते फ़ातिह़ा मुराद है जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम की ह़दीसों में वारिद हुवा। **96 :** मा'ना येह हैं कि ऐ सय्यिदे अम्बिया ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हम ने आप को ऐसी ने'मतें अ़त़ा फ़रमाई जिन के सामने दुन्यवी ने'मतें ह़क़ीर हैं तो आप मताए़ दुन्या से मुस्तग़नी रहें जो यहूदो नसारा वग़ैरा मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को दी गई। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि हम में से नहीं जो क़ुरआन की बदौलत हर चीज़ से मुस्तग़नी न हो गया या'नी क़ुरआन ऐसी ने'मत है जिस के सामने दुन्यवी ने'मतें हेच हैं। **97 :** कि वोह ईमान न लाए **98 :** और उन्हें अपने करम से नवाज़ो **99 :** ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि बांटने वालों से यहूदो नसारा मुराद हैं, चूंकि वोह क़ुरआने करीम के कुछ ह़िस्से पर ईमान लाए जो उन के ख़याल में उन की किताबों के मुवाफ़िक़ था और कुछ के मुन्किर हो गए। क़तादा व इब्ने साइब का क़ौल है कि बांटने वालों से कुफ़्फ़ारे क़ुरैश मुराद हैं जिन में बा'ज़ क़ुरआन को सेह्र बा'ज़ कहानत बा'ज़ अफ़्साना कहते थे। इस त़रह़ उन्हों ने क़ुरआने करीम के ह़क़ में अपने अक़्वाल तक़्सीम कर रखे थे और एक क़ौल येह है कि बांटने वालों से वोह बारह अश्ख़ास मुराद हैं जिन्हें कुफ़्फ़ार ने मक्कए मुकर्रमा के रास्तों पर मुक़र्रर किया था, ह़ज के ज़माने में हर हर रास्ते पर उन में का एक एक शख़्स बैठ जाता था और वोह आने वालों को बहकाने और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से मुन्ह़रिफ़ करने के लिये एक एक बात मुक़र्रर कर लेता था कि कोई आने वालों से येह कहता था कि उन की बातों में न आना कि वोह जादूगर हैं, कोई कहता वोह कज़्ज़ाब हैं, कोई कहता वोह मजनून हैं, कोई कहता वोह काहिन हैं, कोई कहता वोह शाइर हैं, येह सुन कर लोग जब ख़ानए का'बा के दरवाज़े पर आते वहां वलीद बिन मुग़ीरा बैठा रहता, उस से नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم का ह़ाल दरयाफ़्त करते और कहते कि हम ने मक्कए मुकर्रमा आते हुए शह्र के कनारे उन की निस्बत ऐसा सुना वोह कह देता कि ठीक सुना, इस त़रह़ ख़ल्क़ को बहकाते और गुमराह करते, उन लोगों को अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। **100 :** रोज़े क़ियामत **101 :** और जो कुछ वोह सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم और क़ुरआन की निस्बत कहते थे। **102 :** इस आयत में सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को रिसालत की तब्लीग़ और इस्लाम की दा'वत के इज़्हार का हुक्म दिया गया, अ़ब्दुल्लाह बिन उ़बैदा का क़ौल है कि इस आयत के नुज़ूल के वक़्त तक दा'वते इस्लाम ए'लान के साथ नहीं की जाती थी। **103 :** या'नी अपना दीन ज़ाहिर करने पर मुश्रिकों की मलामत करने की परवाह न करो और उन की त़रफ़ मुल्तफ़ित (मुतवज्जेह) न हो और उन के तमस्ख़ुर व इस्तिह़्ज़ा का ग़म न करो।

www.dawateislami.net

كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ ﴿٩٥﴾ الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۚ فَسَوْفَ

उन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं[104] जो अल्लाह के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब

يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾ وَ لَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ﴿٩٧﴾

जान जाएंगे[105] और बेशक हमें मा'लूम है कि उन की बातों से तुम दिलतंग होते हो[106]

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَ كُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿٩٨﴾ وَ اعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى

तो अपने रब को सराहते हुए उस की पाकी बोलो और सज्दा वालों में हो[107] और मरते दम तक अपने रब की

ع

يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ﴿٩٩﴾

इबादत में रहो

ايـاتها ١٢٨ | ١٦ سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ ٧٠ | رکوعاتها ١٦

सूरए नह़्ल मक्किय्या है इस में एक सो अठ्ठाईस आयतें और सोलह रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

104 : कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के पांच सरदार [1]आ़स बिन वाइल सह्मी और [2]अस्वद बिन मुत्त़लिब और [3]अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस और [4]ह़ारिस बिन क़ैस और इन सब का अफ़्सर [5]वलीद इब्ने मुग़ीरा मख़्ज़ूमी, येह लोग नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को बहुत ईज़ा देते और आप के साथ तमस्ख़ुर व इस्तिह्ज़ा करते थे। अस्वद बिन मुत्त़लिब के लिये सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने दुआ़ की थी कि या रब ! इस को अन्धा कर दे। एक रोज़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم मस्जिदे ह़राम में तशरीफ़ फ़रमा थे येह पांचों आए और इन्हों ने ह़स्बे दस्तूर त़ा'नो तमस्ख़ुर के कलिमात कहे और त़वाफ़ में मश्ग़ूल हो गए। इसी ह़ाल में ह़ज़रते जिब्रीले अमीन ह़ज़रत की ख़िदमत में पहुंचे और उन्हों ने वलीद बिन मुग़ीरा की पिंडली की त़रफ़ और आ़स के कफ़े पा (पाउं के तल्वों) की त़रफ़ और अस्वद बिन मुत्त़लिब की आंखों की त़रफ़ और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के पेट की त़रफ़ और ह़ारिस बिन क़ैस के सर की त़रफ़ इशारा किया और कहा मैं इन का शर दफ़्अ़ करूंगा। चुनान्चे थोड़े अ़र्से में येह हलाक हो गए, वलीद बिन मुग़ीरा तीर फ़रोश की दुकान के पास से गुज़रा उस के तहबन्द में एक पैकान चुभा (या'नी नेज़े की नोक चुभी) मगर उस ने तकब्बुर से उस को निकालने के लिये सर नीचा न किया, उस से उस की पिंडली में ज़ख़्म आया और उसी में मर गया, आ़स इब्ने वाइल के पाउं में कांटा लगा और नज़र न आया, इस से पाउं वरम कर गया और येह शख़्स भी मर गया, अस्वद बिन मुत्त़लिब की आंखों में ऐसा दर्द हुवा कि दीवार में सर मारता था, इसी में मर गया और येह कहता मरा कि मुझ को मुह़म्मद ने क़त्ल किया (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) और अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस को इस्तिस्क़ा हुवा (या'नी प्यास लगने की बीमारी हो गई) और कल्बी की रिवायत में है कि इस को लू लगी और इस का मुंह इस क़दर काला हो गया कि घर वालों ने न पहचाना और निकाल दिया, इसी ह़ाल में येह कहता मर गया कि मुझ को मुह़म्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم) के रब ने क़त्ल किया और ह़ारिस बिन क़ैस की नाक से ख़ून और पीप जारी हुवा इसी में हलाक हो गया, इन्हीं के ह़क़ में येह आयत नाज़िल हुई। (خازن) **105 :** अपना अन्जामे कार **106 :** और उन के त़ा'न और इस्तिह्ज़ा और शिर्को कुफ़्र की बातों से आप को मलाल होता है **107 :** कि ख़ुदा परस्तों के लिये तस्बीह़ व इ़बादत में मश्ग़ूल होना ग़म का बेहतरीन इ़लाज है। ह़दीस शरीफ़ में है कि जब सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم को कोई अहम वाक़िआ़ पेश आता तो नमाज़ में मश्ग़ूल हो जाते। **1 :** सूरए नह़्ल मक्किय्या है मगर आयत "فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ" से आख़िर सूरत तक जो आयात हैं वोह मदीनए त़य्यिबा में नाज़िल हुई और इस में और अक़्वाल भी हैं, इस सूरत में सोलह रुकूअ़ और एक सो अठ्ठाईस आयतें और दो हज़ार आठ सो चालीस कलिमे और सात हज़ार सात सो सात ह़र्फ़ हैं।